एकात्म मानवदर्शन की कथा रूप में प्रस्तुति

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के जीवन चरित्र को कथा के रूप में प्रस्तुत किया गया। यह प्रयोग सबसे पहले दीनदयाल शोध संस्थान दिल्ली में हुआ, इसके बाद इस तरह के कथा का आयोजन भोपाल, इंदौर और मुज़्बई में किया गया। यह अपनी तरह का अनूठा प्रयोग था। इस मौजूदा परिवेश में पंडित दीनदयाल के विचारों की प्रासंगिकता बहुत बढ़ गई है। 20वीं सदी में उन्होंने जिस तरह के भारत की परिकल्पना की थी। भारत के विकसित राष्ट्र बनाने के लिए उन्होंने जो मूलमंत्र दिए थे, उसे हर कोई जानना और समझना चाहता है। उनकी उसी अवधारणा को सहजता से सामने रखने के लिए कथा का स्वरूप बनाया गया। जिसमें व्यास यानी पंडितजी के विचारों को कथा के रूप में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के दिल्ली प्रान्त के सहसंचालक आलोक कुमारजी द्वारा प्रस्तुति दी गई।

दीनदयाल उपाध्याय के जन्मशताज़्दी वर्ष में उनके जीवन और कार्य को प्रेरित करती कथा में पंडितजी के कठिनाईयों भरे बचपन का चित्रण किया गया। छोटी आयु में पिताजी और माताजी का साथ छूटने के बाद वह अपने मामाजी के साथ रहे। उनके मामाजी भी जल्दी साथ छोड़